पश्चिम बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (WBBSE)

कक्षा 9 हिंदी

अध्याय 21

राजा राममोहन राय

प्रश्न बैंक

अध्याय-वार प्रश्न बैंक

birlaeducation.org

बिरला एजुकेशन

अध्याय 21: राजा राममोहन राय

भारतीय पुनर्जागरण के प्रभात तारा और आधुनिक भारत के प्रणेता

जीवन की प्रमुख घटनाएँ

समय	घटना
22 मई, सन् 1772	बंगाल के हुगली जिले के राधानगर गाँव में जन्म। पिता रामकांत राय और माता तारिणी देवी।
बचपन और शिक्षा	संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी भाषाएँ सीखीं। हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्म के ग्रंथों का अध्ययन किया।
सन् 1815	कलकत्ता में आत्मीय सभा की स्थापना की, जहाँ एकेश्वरवाद और समाज सुधार पर चर्चा होती थी।
सन् 1817	कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना में सहयोग दिया।
सन् 1821	बंगला समाचार पत्र संवाद कौमुदी निकाला।
20 अगस्त, सन् 1828	ब्रह्म समाज की स्थापना की। एक ईश्वर की उपासना और समाज सुधार इसका उद्देश्य था।
सन् 1829	उनके लंबे संघर्ष के बाद सती प्रथा पर रोक लगी।
सन् 1830	मुगल बादशाह अकबर द्वितीय के दूत बनकर इंग्लैंड गए। बादशाह ने उन्हें राजा की उपाधि दी थी।
27 सितंबर, सन् 1833	इंग्लैंड के ब्रिस्टल नगर में निधन।

birlaeducation.org

बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) 12

सही विकल्प को गहरे (बोल्ड) अक्षरों में दिखाया गया है।

1. राजा राममोहन राय ने बचपन में कौन सी भाषाएँ सीखी थीं? अतिरिक्त

(क) केवल संस्कृत और हिंदी

(ख) संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी

(ग) केवल फारसी और उर्दू

(घ) केवल अंग्रेजी और फ्रेंच

उत्तर: संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी। इन भाषाओं के ज्ञान से वे हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्म के ग्रंथों का अध्ययन कर सके।

---

2. आत्मीय सभा की स्थापना किस वर्ष हुई थी? अतिरिक्त

(क) सन् 1815

(ख) सन् 1817

(ग) सन् 1821

(घ) सन् 1828

उत्तर: सन् 1815। राममोहन राय ने कलकत्ता में यह सभा बनाई थी, जहाँ एकेश्वरवाद पर चर्चा होती थी।

---

3. सती प्रथा पर रोक लगाने वाले गवर्नर जनरल कौन थे? अतिरिक्त

(क) लॉर्ड डलहौजी

(ख) लॉर्ड विलियम बेंटिक

(ग) लॉर्ड कर्जन

(घ) लॉर्ड माउंटबेटन

उत्तर: लॉर्ड विलियम बेंटिक। राममोहन राय के लंबे संघर्ष के बाद उन्होंने सन् 1829 में सती प्रथा पर रोक लगा दी।

---

4. राजा राममोहन राय इंग्लैंड किस वर्ष गए थे? अतिरिक्त

birlaeducation.org

(क) सन् 1821

(ख) सन् 1828

(ग) सन् 1830

(घ) सन् 1833

उत्तर: सन् 1830। वे मुगल बादशाह अकबर द्वितीय के दूत बनकर इंग्लैंड गए थे।

---

5. संवाद कौमुदी किस भाषा का समाचार पत्र था? अतिरिक्त

(क) हिंदी

(ख) बंगला

(ग) संस्कृत

(घ) फारसी

उत्तर: बंगला। राममोहन राय ने सन् 1821 में यह पत्र निकाला था और इसके माध्यम से समाज सुधार के विचार लोगों तक पहुँचाए।

---

6. ब्रह्म समाज में किसकी उपासना पर बल दिया गया? अतिरिक्त

(क) अनेक देवी देवताओं की

(ख) एक निराकार ईश्वर की

(ग) मूर्तियों की

(घ) प्रकृति की शक्तियों की

उत्तर: एक निराकार ईश्वर की। ब्रह्म समाज में मूर्तिपूजा का विरोध किया गया और एक ईश्वर की उपासना पर बल दिया गया।

---

7. राजा राममोहन राय किसके समर्थक थे? अतिरिक्त

(क) सती प्रथा के

(ख) बाल विवाह के

(ग) विधवा विवाह के

(घ) जाति प्रथा के

उत्तर: विधवा विवाह के। वे स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह के समर्थक थे और सती प्रथा, बाल विवाह तथा जाति प्रथा के विरोधी थे।

---

8. सन् 1817 में स्थापित हिंदू कॉलेज आगे चलकर क्या बना? अतिरिक्त

(क) कलकत्ता विश्वविद्यालय

(ख) प्रेसिडेंसी कॉलेज

(ग) संस्कृत कॉलेज

(घ) फोर्ट विलियम कॉलेज

उत्तर: प्रेसिडेंसी कॉलेज। हिंदू कॉलेज में भारतीय विद्यार्थियों को अंग्रेजी और आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

---

birlaeducation.org

9. मूर्तिपूजा के बारे में राजा राममोहन राय का क्या मत था? अतिरिक्त

(क) वे मूर्तिपूजा के प्रबल समर्थक थे

(ख) वे मूर्तिपूजा का विरोध करते थे

(ग) वे मूर्तिपूजा के बारे में कुछ नहीं कहते थे

(घ) वे केवल मंदिरों में मूर्तिपूजा के पक्ष में थे

उत्तर: वे मूर्तिपूजा का विरोध करते थे। वे मानते थे कि ईश्वर एक है और निराकार है, इसलिए उसकी उपासना मूर्ति के बिना होनी चाहिए।

---

10. राजा राममोहन राय ने हिंदू मुस्लिम एकता को किसके लिए आवश्यक माना? अतिरिक्त

(क) व्यापार के लिए

(ख) भारत की आजादी के लिए

(ग) शिक्षा के प्रसार के लिए

(घ) धर्म प्रचार के लिए

उत्तर: भारत की आजादी के लिए। वे मानते थे कि एकता के बिना भारत दासता की जंजीर से मुक्त नहीं हो सकता।

---

11. राजा राममोहन राय ने भारत के विकास के लिए किस शिक्षा को आवश्यक माना? अतिरिक्त

(क) केवल संस्कृत शिक्षा को

(ख) पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा को

(ग) केवल धार्मिक शिक्षा को

(घ) केवल व्यापारिक शिक्षा को

उत्तर: पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा को। वे चाहते थे कि भारतीय आधुनिक विज्ञान और तर्क की शिक्षा प्राप्त करें, ताकि अंधविश्वास दूर हो।

---

12. ब्रह्म समाज की स्थापना किस तारीख को हुई थी? अतिरिक्त

(क) 22 मई, सन् 1772

(ख) 15 अगस्त, सन् 1815

(ग) 20 अगस्त, सन् 1828

(घ) 27 सितंबर, सन् 1833

उत्तर: 20 अगस्त, सन् 1828। इसी दिन राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की थी।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (VSA) 10

उत्तर एक या दो पंक्तियों में लिखिए।

1. एकेश्वरवाद का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

उत्तर: एकेश्वरवाद का अर्थ है एक ही ईश्वर में विश्वास। राममोहन राय मानते थे कि ईश्वर एक है, सर्वोपरि है और संसार का रचयिता है।

birlaeducation.org

---

2. आत्मीय सभा में किस विषय पर चर्चा होती थी? अतिरिक्त

उत्तर: आत्मीय सभा में एकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा का विरोध और समाज सुधार के विषयों पर चर्चा होती थी।

---

3. बाल विवाह के बारे में राजा राममोहन राय क्या सोचते थे? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय बाल विवाह के विरोधी थे। वे इसे एक कुरीति मानते थे जो बच्चों के जीवन और शिक्षा को नष्ट करती है।

---

4. भारतीय पुनर्जागरण का प्रभात तारा किसे कहा जाता है? अतिरिक्त

उत्तर: भारतीय पुनर्जागरण का प्रभात तारा राजा राममोहन राय को कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने सबसे पहले भारतीय समाज में नई चेतना जगाई।

---

5. राममोहन राय ने स्त्री शिक्षा का समर्थन क्यों किया? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय मानते थे कि नारियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए, क्योंकि शिक्षा के बिना समाज की प्रगति संभव नहीं है।

---

6. ब्रह्म समाज में मूर्तिपूजा के बारे में क्या मत था? अतिरिक्त

उत्तर: ब्रह्म समाज में मूर्तिपूजा का विरोध किया गया था, क्योंकि ईश्वर एक है और निराकार है।

7. राममोहन राय के अनुसार धर्म के नाम पर विवाद क्यों नहीं होना चाहिए? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय के अनुसार सभी धर्मों का सार एक ही है और ईश्वर एक है, इसलिए धर्म के नाम पर विवाद का कोई कारण नहीं रह जाता।

8. पुनर्जागरण शब्द का क्या अर्थ है? अतिरिक्त

उत्तर: पुनर्जागरण का अर्थ है फिर से जागना, नया जागरण। राममोहन राय ने अंधविश्वास में डूबे समाज को फिर से जगाने का कार्य किया।

9. राममोहन राय ने पत्रकारिता का उपयोग किस काम के लिए किया? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय ने संवाद कौमुदी पत्र के माध्यम से समाज सुधार के विचार लोगों तक पहुँचाए और लोगों में जागरूकता फैलाई।

10. हिंदू कॉलेज में विद्यार्थियों को किसकी शिक्षा दी जाती थी? अतिरिक्त

उत्तर: हिंदू कॉलेज में भारतीय विद्यार्थियों को अंग्रेजी और आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

लघु उत्तरीय प्रश्न (SA) 10

birdeducation.org

उत्तर 3 से 5 पंक्तियों में लिखिए।

1. राजा राममोहन राय के बचपन और शिक्षा का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय बचपन से ही पढ़ने में तेज थे। उन्होंने संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी भाषाएँ सीखीं। इन भाषाओं के ज्ञान से उन्होंने हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्म के ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया। इसी अध्ययन ने उनके विचारों को आकार दिया और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्मों में एकेश्वरवाद ही है और ईश्वर एक है।

2. सती प्रथा से समाज को क्या हानि होती थी? अतिरिक्त

उत्तर: सती प्रथा में पति की मृत्यु के बाद पत्नी को उसकी चिता पर जला दिया जाता था। यह एक क्रूर प्रथा थी जो नारियों के जीवन का अधिकार छीन लेती थी। इससे समाज में नारियों के प्रति भेदभाव और अत्याचार बढ़ता था। यह प्रथा मानवता के विरुद्ध थी और समाज को अंधकार में रखती थी। राममोहन राय ने इसी कारण इसका कड़ा विरोध किया।

3. ब्रह्म समाज और आत्मीय सभा में क्या संबंध था? अतिरिक्त

उत्तर: आत्मीय सभा सन् 1815 में बनी एक छोटी सभा थी, जहाँ राममोहन राय के मित्र और विद्वान एकत्र होकर धर्म और समाज के विषयों पर चर्चा करते थे। इसमें एकेश्वरवाद और समाज सुधार पर विचार होता था। यही सभा आगे चलकर ब्रह्म समाज का आधार बनी। सन् 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना इसी विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए हुई।

4. राममोहन राय ने अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन क्यों किया? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय मानते थे कि पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा भारत के विकास के लिए आवश्यक है। वे चाहते थे कि भारतीय आधुनिक विज्ञान और तर्क की शिक्षा प्राप्त करें, ताकि अंधविश्वास दूर हो और देश प्रगति करे। अंग्रेजी शिक्षा से भारतीयों को दुनिया के नए ज्ञान से जुड़ने का अवसर मिलता था। इसी कारण उन्होंने हिंदू कॉलेज की स्थापना में सहयोग दिया।

---

5. राममोहन राय के अनुसार नारी का सम्मान क्यों जरूरी है? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय मानते थे कि प्राचीन काल में नारियों को वे अधिकार मिले हुए थे जो पुरुषों के थे, पर बाद में वे छिन गए। सती प्रथा, बाल विवाह और शिक्षा से वंचित रखना नारी के सम्मान के विरुद्ध था। वे स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह के समर्थक थे। उनके अनुसार बिना नारी के सम्मान के समाज की प्रगति संभव नहीं है, क्योंकि नारी भी मानव मात्र की समानता की अधिकारी है।

---

6. राममोहन राय के विचारों से भारतीय समाज में क्या बदलाव आया? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय के विचारों से भारतीय समाज में नई चेतना जगी। सती प्रथा पर सन् 1829 में रोक लगी, जो उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी। ब्रह्म समाज के माध्यम से एकेश्वरवाद और समाज सुधार का संदेश फैला। अंग्रेजी शिक्षा और स्त्री शिक्षा के समर्थन से भारतीयों में आधुनिक सोच बढ़ी। उनके विचारों ने बाद के समाज सुधारकों को भी प्रेरणा दी।

---

7. संवाद कौमुदी से समाज में क्या जागरूकता फैली? अतिरिक्त

उत्तर: संवाद कौमुदी सन् 1821 में निकाला गया बंगला समाचार पत्र था। इसके माध्यम से राममोहन राय समाज सुधार के विचार लोगों तक पहुँचाते थे। इस पत्र से लोग सती प्रथा, बाल विवाह और जाति भेद जैसी कुरीतियों के बारे में सोचने लगे। पत्रकारिता से जन जागरण हुआ और समाज सुधार का संदेश गाँव गाँव तक पहुँचा।

bharateducation.org

---

8. राममोहन राय को राजा की उपाधि मिलने का क्या महत्त्व था? अतिरिक्त

उत्तर: मुगल बादशाह अकबर द्वितीय ने राममोहन राय को राजा की उपाधि दी थी। इसी उपाधि के कारण वे राजा राममोहन राय कहलाए। बादशाह ने उन्हें अपना दूत बनाकर सन् 1830 में इंग्लैंड भेजा था। इस सम्मान से उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी और वे भारतवासियों के अधिकारों की बात ब्रिटिश सरकार तक पहुँचा सके।

---

9. राममोहन राय ने हिंदू मुस्लिम एकता पर क्यों बल दिया? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय के हृदय में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई सबके लिए जगह थी। वे मानते थे कि सभी धर्मों का सार एक ही है और ईश्वर एक है। उनके अनुसार जाति और धर्म के भेद ने समाज को बाँट दिया था और एकता के अभाव में ही भारत दासता की जंजीर में जकड़ा रहा। इसलिए वे हिंदू मुस्लिम एकता को भारत की आजादी के लिए आवश्यक मानते थे।

---

10. राजा राममोहन राय के जीवन से विद्यार्थियों को क्या प्रेरणा मिलती है? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय के जीवन से विद्यार्थियों को यह प्रेरणा मिलती है कि सच्ची शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं है, बल्कि समाज की बुराइयों को दूर करने का साहस है। उन्होंने बचपन से ही अनेक भाषाएँ सीखीं और ज्ञान से समाज सुधार का कार्य किया। वे अंधविश्वास के विरुद्ध तर्क और सत्य के पक्ष में खड़े रहे। विद्यार्थी उनसे सीख सकते हैं कि कठिनाइयों से डरे बिना सत्य और मानवता के लिए संघर्ष करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (LAQ) 8

उत्तर विस्तार से लिखिए।

1. राजा राममोहन राय के बचपन, शिक्षा और विचारों के निर्माण का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई, सन् 1772 को बंगाल के हुगली जिले के राधानगर गाँव में हुआ था। उनके पिता रामकांत राय और माता तारिणी देवी थे। बचपन से ही वे पढ़ने में तेज थे। उन्होंने संस्कृत, फारसी, अरबी और अंग्रेजी भाषाएँ सीखीं। इन भाषाओं के ज्ञान से उन्होंने हिंदू, इस्लाम और ईसाई धर्म के ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया। अध्ययन के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्मों में एकेश्वरवाद ही है और ईश्वर एक है। इसी ज्ञान ने उनके विचारों को आकार दिया। वे मूर्तिपूजा और अंधविश्वास के विरोधी बने और मानव मात्र की समानता तथा मानवीय स्वतंत्रता के पक्षधर बने। उनके विचारों का निर्माण किसी एक धर्म तक सीमित नहीं था, बल्कि सभी धर्मों के सार को समझने से हुआ था।

---

2. राजा राममोहन राय ने समाज की किन कुरीतियों को चुनौती दी और उनके क्या परिणाम हुए? अतिरिक्त

उत्तर: उस समय भारतीय समाज सती प्रथा, बाल विवाह, जाति प्रथा और छुआछूत जैसी कुरीतियों से ग्रस्त था। राममोहन राय ने इन सभी कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई। सती प्रथा के विरुद्ध उनके लंबे संघर्ष के कारण सन् 1829 में इस प्रथा पर रोक लगी, जो उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि थी। उन्होंने शास्त्रों के आधार पर सिद्ध किया कि सती प्रथा धर्म के अनुसार सही नहीं है। उन्होंने जाति भेद और छुआछूत को मानवता का महान शत्रु बताया और कहा कि जाति भेद हमारी गुलामी का प्रमुख कारण रहा है। बाल विवाह का भी उन्होंने विरोध किया। उनके संघर्ष का परिणाम यह हुआ कि समाज में नई चेतना जगी, स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन बढ़ा और बाद के समाज सुधारकों को भी उनसे प्रेरणा मिली।

birlaeducation.org

---

3. ब्रह्म समाज के सिद्धांतों और भारतीय समाज पर उसके प्रभाव का वर्णन कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: ब्रह्म समाज की स्थापना 20 अगस्त, सन् 1828 को राजा राममोहन राय ने की थी। इससे पहले सन् 1815 में उन्होंने आत्मीय सभा बनाई थी, जो आगे चलकर ब्रह्म समाज का आधार बनी। ब्रह्म समाज का मुख्य सिद्धांत एक ईश्वर की उपासना था। इसमें मूर्तिपूजा का विरोध किया गया और कहा गया कि ईश्वर एक है, निराकार है और सर्वोपरि है। ब्रह्म समाज का उद्देश्य समाज सुधार भी था: सती प्रथा, बाल विवाह और जाति भेद का विरोध तथा स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह का समर्थन। ब्रह्म समाज का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। इससे लोगों में एकेश्वरवाद की समझ बढ़ी, अंधविश्वास कम हुआ और समाज सुधार की नई लहर चली। ब्रह्म समाज ने भारतीय समाज में नई चेतना जगाई और आगे चलकर देवेंद्रनाथ ठाकुर और केशवचंद्र सेन जैसे लोगों ने इसके कार्य को आगे बढ़ाया।

---

4. राजा राममोहन राय के धार्मिक विचारों ने हिंदू समाज को कैसे बदला? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय ने अनेक भाषाओं के ज्ञाता होने के कारण विभिन्न धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया था। अध्ययन के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्मों में एकेश्वरवाद का ही प्रचलन है। ईश्वर एक है, सर्वोपरि है और संसार का रचयिता है। उसका वर्णन अनेक रूपों में मिलता है, पर सबका सार तत्व एक है। यदि हम उस सर्वोपरि सत्य के स्वरूप को जान पाएँ तो धर्म के नाम पर कोई विवाद ही नहीं रह जाएगा। भारत ने उपनिषदों को अपना पवित्र ग्रंथ माना है। उनके अनुसार सच्चा धार्मिक वह है जो अपने को परमात्मा का अंश मानता है। इन विचारों ने हिंदू समाज को बदला। मूर्तिपूजा और अंधविश्वास पर सवाल उठने लगे, लोग धर्म को तर्क की कसौटी पर परखने लगे और धर्म के नाम पर होने वाले भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठने लगी।

---

5. राजा राममोहन राय एक समाज सुधारक के साथ साथ शिक्षाविद भी थे, स्पष्ट कीजिए। अतिरिक्त

उत्तर: राजा राममोहन राय केवल समाज सुधारक नहीं थे, वे एक शिक्षाविद भी थे। समाज सुधारक के रूप में उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह, जाति प्रथा और अस्पृश्यता के विरुद्ध संघर्ष किया। सती प्रथा के विरुद्ध उनके संघर्ष से सन् 1829 में इस प्रथा पर रोक लगी। वे स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह के समर्थक थे। शिक्षाविद के रूप में वे पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी शिक्षा को भारत के विकास के लिए आवश्यक मानते थे। सन् 1817 में कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना में उन्होंने सहयोग दिया, जहाँ भारतीय विद्यार्थियों को अंग्रेजी और आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। उन्होंने संवाद कौमुदी पत्र निकालकर लोगों में जागरूकता फैलाई। वे चाहते थे कि भारतीय आधुनिक विज्ञान और तर्क की शिक्षा प्राप्त करें, ताकि अंधविश्वास दूर हो और देश प्रगति करे। इस प्रकार समाज सुधार और शिक्षा दोनों क्षेत्रों में उनका योगदान महान था।

---

6. राजा राममोहन राय के विचारों का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर क्या प्रभाव पड़ा? अतिरिक्त

उत्तर: राममोहन राय के विचारों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की नींव तैयार की। उन्होंने कहा था कि जाति भेद, जिससे हिंदू समाज अनेक जाति उपजाति में बँट गया है, हमारी गुलामी का प्रमुख कारण रहा है। एकता के अभाव में ही हम दासता की जंजीर में जकड़े रहे। उन्होंने मानव मात्र की समानता और मानवीय स्वतंत्रता का संदेश दिया। हिंदू मुस्लिम एकता को वे भारत की आजादी के लिए आवश्यक मानते थे। उनके विचारों से भारतीयों में नई चेतना जगी और वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुए। बाद के समाज सुधारकों और स्वतंत्रता सेनानियों ने उनके आदर्शों को आगे बढ़ाया। इस प्रकार राममोहन राय ने भारत को केवल समाज सुधार का नहीं, बल्कि स्वतंत्रता की चेतना का भी संदेश दिया।

---

7. राजा राममोहन राय और ईश्वरचंद्र विद्यासागर के सुधार कार्यों में क्या समानता थी? अतिरिक्त

birlaeducation.org

उत्तर: राजा राममोहन राय और ईश्वरचंद्र विद्यासागर दोनों ही उन्नीसवीं सदी के महान समाज सुधारक थे और दोनों ने भारतीय समाज की कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया। दोनों ने सती प्रथा और बाल विवाह का विरोध किया। दोनों स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे और मानते थे कि नारियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा का अधिकार मिलना चाहिए। दोनों ने विधवा विवाह का समर्थन किया। दोनों ने अंधविश्वास के विरुद्ध तर्क का संदेश दिया। अंतर यह था कि राममोहन राय ने एकेश्वरवाद, ब्रह्म समाज और पाश्चात्य शिक्षा पर बल दिया, जबकि विद्यासागर ने विधवा विवाह कानून और बंगला शिक्षा के प्रसार पर अधिक कार्य किया। फिर भी दोनों का लक्ष्य एक ही था, भारतीय समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना।

---

8. राजा राममोहन राय की इंग्लैंड यात्रा का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा? अतिरिक्त

उत्तर: राजा राममोहन राय सन् 1830 में मुगल बादशाह अकबर द्वितीय के दूत बनकर इंग्लैंड गए थे। बादशाह ने उन्हें राजा की उपाधि दी थी। इंग्लैंड में वे भारतवासियों के कल्याण के कार्य में लगे रहे। वे वहाँ भारत की समस्याओं और भारतीयों के अधिकारों की बात ब्रिटिश सरकार तक पहुँचाना चाहते थे। उनकी यात्रा का प्रभाव यह हुआ कि ब्रिटेन के लोगों को भारत की स्थिति और भारतीयों की माँगों के बारे में जानकारी मिली। भारत में भी यह संदेश गया कि भारतीय अपने अधिकारों के लिए विदेश में भी आवाज उठा सकते हैं। दुर्भाग्य से इंग्लैंड में ही 27 सितंबर, सन् 1833 को ब्रिस्टल में उनका निधन हो गया, पर उनकी यात्रा ने भारतीयों में आत्मसम्मान और अधिकारों की चेतना जगाई।
